



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 2, February 2024

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.423



9940 572 462



6381 907 438



ijirset@gmail.com



www.ijirset.com

वर्तमान में भारतीय विदेश नीति : विशेषताएँ एवं आवश्यकताएँ

DR. RAJEEV CHOUHAN

SANVIDHA LECTURER IN POLITICAL SCIENCE, GOVT. PG COLLEGE, BARMER, RAJASTHAN, INDIA

सार

भारत की विदेश नीति अपने राष्ट्रीय हितों का पालन करते हुए सभी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने के सिद्धांत पर आधारित है। भारत हमेशा दुनिया में शांति और स्थिरता का समर्थक रहा है, और इसकी विदेश नीति लोकतंत्र के मूल्यों, मानवाधिकारों के सम्मान और बहुपक्षवाद द्वारा निर्देशित है।

परिचय

विदेश नीति के उद्देश्य

भारत की विदेश नीति में कम से कम निम्नलिखित चार मुख्य उद्देश्य हैं:

पहला उद्देश्य: भारत की विदेश नीति का पहला और व्यापक उद्देश्य-किसी अन्य देश की तरह-अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करना है। "राष्ट्रीय हितों" का दायरा काफी व्यापक है। उदाहरण के लिए हमारे विषय में इसमें शामिल है: क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए हमारी सीमाओं की सुरक्षा, सीमा पार आतंकवाद का मुकाबला करना, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा। संक्षेप में, पहला उद्देश्य भारत को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक खतरों से बचाना है।

दूसरा उद्देश्य: दूसरा उद्देश्य एक बाहरी परिवेश बनाना है जो समावेशी घरेलू विकास के लिए अनुकूल हो। मैं विस्तृत रूप से: हमें विदेशी भागीदारों, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, आधुनिक प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के रूप में पर्याप्त बाहरी आदानों की आवश्यकता है ताकि हम भारत में एक विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा विकसित कर सकें, ताकि मेक इन इंडिया, स्किल्स इंडिया जैसे हमारे कार्यक्रमों को विकसित किया जा सके। डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी, सफल हो सकते हैं, ताकि हमारे पास उन्नत कृषि और आधुनिक रक्षा उपकरण आदि हों। हाल के वर्षों में भारत की विदेश नीति के इस पहलू पर अतिरिक्त ध्यान केंद्रित करने के परिणामस्वरूप राजनीतिक कूटनीति के साथ आर्थिक कूटनीति को एकीकृत करके विकास की कूटनीति हुई है।

तीसरा उद्देश्य : पिछले 72 वर्षों में भारत एक गरीब विकासशील देश से उभरती हुई अर्थव्यवस्था में विकसित हुआ है और अब इसे एक महत्वपूर्ण वैश्विक अगुवा के रूप में गिना जाता है। इसलिए तीसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत की आवाज वैश्विक मंचों पर सुनी जाए और भारत आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्तीकरण, भेदभाव रहित वैश्विक व्यापार वैश्विक शासन की संस्थाओं के सुधार, जो दुनिया के बाकी के रूप में ज्यादा के रूप में भारत को प्रभावित करते हैं। जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर विश्व जनमत को प्रभावित करने में सक्षम हो।[1,2,3]

चौथा उद्देश्य: भारत के 30 मिलियन सशक्त प्रवासी हैं जिनमें अनिवासी भारतीय और भारतीय मूल के व्यक्ति शामिल हैं, जो पूरे विश्व में फैले हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों में यह मेजबान देशों में एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरा है। यह भारत और अन्य देशों के बीच मजबूत कड़ी प्रदान करता है और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। चौथा और एक महत्वपूर्ण उद्देश्य भारतवासियों को शामिल करना और विदेशों में उनकी उपस्थिति से अधिकतम लाभ प्राप्त करना है, जबकि साथ ही यथासंभव उनके हितों की रक्षा करना है।

गतिशील विश्व : सक्रिय और व्यावहारिक दृष्टिकोण

हम एक गतिशील विश्व में रह रहे हैं। इसलिए भारत की विदेश नीति सक्रिय, लचीली और व्यावहारिक होने के लिए तैयार है ताकि उभरती स्थितियों का सामना करने के लिए त्वरित समायोजन किया जा सके। हालांकि, अपनी विदेश नीति के कार्यान्वयन में भारत निरपवाद रूप से बुनियादी सिद्धांतों का पालन करता है जिस पर कोई समझौता नहीं किया जाता है।

विदेश नीति: मौलिक सिद्धांत

इन मौलिक सिद्धांतों में शामिल हैं:

1. पंचशील, या पांच गुण जिन पर 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षर किए गए जो औपचारिक रूप से चीन और भारत के तिब्बत क्षेत्र के बीच व्यापार पर समझौते में प्रतिपादित किए गए थे, ने और बाद में विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संचालन के आधार के रूप में कार्य करने के लिए विकसित हुए। ये पांच सिद्धांत हैं- (i) दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान, (ii) परस्पर गैर आक्रामकता, (iii) परस्पर गैर हस्तक्षेप, (iv) समानता और पारस्परिक लाभ, और (v) शांतिपूर्ण सह अस्तित्व।

2. वसुधैव कुटुम्बकम् (विश्व एक परिवार है) इससे संबंधित है सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास की अवधारणा। दूसरे शब्दों में समूचा विश्व समुदाय एक ही बड़े वैश्विक परिवार का एक हिस्सा है और परिवार के सदस्यों को शांति और सद्भाव रखना चाहिए, मिलजुल कर काम करना चाहिए और एक साथ बढ़ने और पारस्परिक लाभ के लिए एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए।

3. भारत विचारधाराओं के पारगमन और व्यवस्थाओं में परिवर्तन के विरुद्ध है

भारत लोकतंत्र में विश्वास करता है और समर्थन करता है; हालांकि भारत का विचारधाराओं के पारगमन में विश्वास नहीं है। भारत इसलिए चाहे वह लोकतंत्र हो, राजशाही हो या सैन्य तानाशाही सरकार के साथ खड़ा है। भारत का मानना है कि अपने नेताओं को चुनना या हटाना और शासन का रूप बरकरार रखना या बदलना देश की जनता पर निर्भर है। उपर्युक्त सिद्धांत का विस्तार करके भारत किसी अन्य देश या देशों के समूह द्वारा बल या अन्य साधनों के उपयोग से किसी विशेष देश में सत्ता परिवर्तन या क्षेत्रीय अखंडता के उल्लंघन के विचार का समर्थन नहीं करता। (इराक, लीबिया, सीरिया में अमेरिकी हस्तक्षेप अथवा जॉर्जिया, यूक्रेन आदि में रूस का हस्तक्षेप) [4,5,6]

इसके साथ ही, भारत जहां भी क्षमता मौजूद है, वहां लोकतंत्र को बढ़ावा देने में संकोच नहीं करता; यह क्षमता निर्माण में सक्रिय रूप से सहायता प्रदान करने और लोकतंत्र की संस्थाओं को मजबूत करके किया जाता है, हालांकि, संबंधित सरकार की स्पष्ट सहमति से। (पूर्व अफगानिस्तान)

4. भारत एकतरफा प्रतिबंधों/सैन्य कार्रवाइयों का समर्थन नहीं करता

भारत किसी अन्य देश या देशों के समूह द्वारा किसी अन्य देश के विरुद्ध प्रतिबंध/सैन्य कार्रवाई करने के विचार का समर्थन नहीं करता है जब तक कि अंतर्राष्ट्रीय सर्वसम्मति के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र द्वारा इन प्रतिबंधों/सैन्य कार्रवाइयों को मंजूरी नहीं दी जाती। इसलिए भारत केवल ऐसे शांति-सैन्य अभियानों में योगदान देता है जो संयुक्त राष्ट्र शांति सेनाओं का हिस्सा हैं।

(भारत ने लगभग 195,000 सैनिक भेजे हैं, जो किसी भी देश से भेजी गई सबसे बड़ी संख्या हैं, इसने 49 से अधिक मिशनों में भाग लिया और 168 भारतीय शांतिरक्षकों ने संयुक्त राष्ट्र मिशनों में सेवा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र मिशनों के लिए प्रख्यात बल कमांडर भी उपलब्ध कराए हैं और यह जारी है।

5. हस्तक्षेप: नहीं, मध्यवर्तन : हां

भारत का दूसरे देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने में विश्वास नहीं है। तथापि, यदि किसी देश द्वारा किसी अधिनियम-निर्दोष या जानबूझकर भारत के राष्ट्रीय हितों को अतिक्रमण किया जाता है, तो भारत त्वरित और समय पर हस्तक्षेप करने में संकोच नहीं करता है। जब मैं कहूंगा कि मध्यवर्तन हस्तक्षेप से गुणात्मक रूप से भिन्न है, विशेषकर जब संबंधित देश के अनुरोध पर मध्यवर्तन किया जाता है तो आप मुझसे सहमत होंगे। (उदाहरण: बांग्लादेश 1971, श्रीलंका में आईपीकेएफ (1987-90), मालदीव (1988)।

6. आक्रामकता पर रचनात्मक जुड़ाव

भारत, आक्रामकता पर रचनात्मक जुड़ाव की नीति की हिमाकत करता है। इसका मानना है कि हिंसक जवाबी कार्रवाई और टकराव ही मामलों को उलझा सकता है। युद्ध कोई समाधान नहीं है; हर युद्ध के बाद विरोधी दल अंततः वार्ता की मेज पर आते हैं जिसके द्वारा समय पर बहुत नुकसान पहले ही किया जा चुका होता है। यह विशेष रूप से पाकिस्तान पर लागू होता है-भारत में लक्षित राष्ट्र प्रायोजित आतंकवाद का मूल।

हालांकि, बातचीत की नीति को भारत की कमजोरी के रूप में गलत समझा जा सकता है। भारत द्वारा की गई प्रत्येक और वक्तव्य पर हमारे धैर्य का परीक्षण किया जाता है। सितंबर 2016 में पाकिस्तान के कब्जे वाले भारतीय क्षेत्र में आतंकी -लॉन्च पैड को निशाना बनाने के लिए सर्जिकल स्ट्राइक ऐसा ही एक उदाहरण है। पुलवामा आतंकवादी हमले के प्रतिशोध में फरवरी 2019 में बालाकोट में आतंकवादी शिविरों में हवाई हमला एक और उदाहरण है।

7. सामरिक स्वायत्तता: साझेदारी-हां, गठजोड़: नहीं

निर्णय लेने और सामरिक स्वायत्तता की स्वतंत्रता भारत की विदेश नीति की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है। इस प्रकार भारत साझेदारी में विश्वास करता है और गठबंधनों, विशेष रूप से सैन्य गठबंधनों से दूर है।

8. वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक सहमति

भारत विश्व व्यापार व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकार, वैश्विक शासन जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक बहस और वैश्विक सहमति की हिमाकत करता है।

भारत की विदेश नीति की प्राथमिकताएं:

1. गुटनिरपेक्षता से लेकर बहु-व्यस्तता तक

आजादी के बाद कई वर्षों तक भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया था और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (गुटनिरपेक्ष आंदोलन) का नेतृत्व किया था। हालांकि, अमेरिका और सोवियत संघ नामक दो महाशक्तियों के बीच शीत युद्ध की पृष्ठभूमि में भारत को आमतौर पर सोवियत संघ की ओर अधिक झुकाव के रूप में देखा जाता था। 1991 में सोवियत संघ के पतन ने भारत के लिए युद्धाभ्यास करने के लिए एक बड़ा सामरिक स्थान बनाया। वर्तमान में, हालांकि भारत ने गुटनिरपेक्षता के बुनियादी सिद्धांत को नहीं छोड़ा है, भारत बहु-चर्चा की नीति में विश्वास करता है; हालांकि, यह दूसरे की कीमत पर एक के साथ संबंधों के निर्माण में विश्वास नहीं करता है।

2. दक्षिण एशिया: भारत की पड़ोस पहले-नीति

भारत क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों के मामले में दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा देश है; भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत है और इसकी विकास दर इस क्षेत्र के अन्य लोगों की तुलना में अधिक है। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में एक महत्वपूर्ण अदाकार के रूप में भारत का कद बढ़ रहा है। एक जिम्मेदार परमाणु राष्ट्र के रूप में भारत की साख और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में उसकी सिद्ध क्षमताओं को विश्व व्यापी स्वीकार किया जाता है। इन विषमताओं ने ऐतिहासिक रूप से भारत की तुलना में इस क्षेत्र में विश्वास की कमी की भावना पैदा की है। पड़ोसी देशों में निहित स्वार्थों ने गलत आख्यान जारी किए हैं जैसेकि भारत एक "बड़े धमकाने" या "बड़े भाई" जैसे कार्य करता है कुछ देशों में समाज के ऐसे वर्ग हैं जो 'भारतीय विरोधी' को 'देशभक्ति' के बराबर मानते हैं।

मई 2014 में अनावरण की गई भारत की पड़ोस की पहली नीति में विश्वास की कमी को दूर करना, संबंधों को पुनर्निर्धारित करना और मित्रता के संबंधों का निर्माण करना और पूरी तरह से पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग को समझना है। अब तक का परिणाम मिला-जुला रहा है; पड़ोसियों के साथ जुड़ाव एक सतत प्रक्रिया है और संबंधों का स्तर अक्सर हमारे पड़ोस में सरकारों की स्थानांतरण प्राथमिकताओं से निर्धारित होता है। इस समय भूटान के साथ भारत के संबंध अनुकरणीय हैं; अफगानिस्तान, बांग्लादेश और मालदीव के साथ हमारे घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण संबंध हैं; श्रीलंका के साथ संबंधों में एक नया अध्याय उस देश में नई सरकार के चुनाव के साथ शुरू हो गया है। नेपाल के साथ संबंध कमोबेश एक एड़ी पर हैं। हाल ही में, पाकिस्तान के साथ संबंध इतिहास में सबसे न्यून स्तर पर हो गए। [7,8,9]

दक्षिण एशिया: सार्क और बिस्मटेक

भारत, दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) प्रक्रियाओं के माध्यम से दक्षिण एशिया के एकीकरण के लिए प्रतिबद्ध है। हालांकि, एक संगठन के रूप में सार्क को जब सुपुर्दगी के मामले में मापा गया तो अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा है। यह कई दशकों से अस्तित्व में है और फिर भी दक्षिण एशिया विश्व का सबसे कम एकीकृत क्षेत्र बना हुआ है। इसे बदतर बनाने के लिए भारत-पाकिस्तान संबंधों और पाकिस्तान की बाधा की नीति का सार्क में प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। काठमांडू में नवंबर, 2014 में 18वें शिखर सम्मेलन के बाद से सरकारों के प्रमुखों/राष्ट्राध्यक्षों के स्तर पर कोई सार्क शिखर सम्मेलन आयोजित नहीं

किया गया है। 19वां शिखर सम्मेलन 2016 में इस्लामाबाद में आयोजित किया जाना था, जिसे भारत ने पाकिस्तान द्वारा सीमा पार आतंकवाद के निरंतर राज्य संरक्षण और प्रायोजन को देखते हुए बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया था। बांग्लादेश, भूटान और नेपाल ने अपने निर्णय में भारत का समर्थन किया था।

कमोबेश निष्क्रिय सार्क की पृष्ठभूमि में भारत ने दो आयामी दृष्टिकोण अपनाए हैं। पहला, यह उतने ही सदस्यों के साथ उप-क्षेत्रीय परियोजनाएं शुरू करने के लिए तैयार है जितना कि सहमत हैं। नतीजतन भारत, नेपाल, भूटान और बांग्लादेश ने आगे बढ़कर जून 2015 में चार सार्क देशों के बीच सड़क यातायात की निर्बाध आवाजाही के लिए एक ऐतिहासिक मोटर वाहन समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिससे पाकिस्तान और अन्य लोग अलग हो गए। बाद में मई 2017 में, भारत ने दक्षिण एशिया उपग्रह-दक्षिण एशियाई क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की संचार सेवाएं प्रदान करने के लिए इसरो द्वारा निर्मित एक संचार उपग्रह का प्रक्षेपण किया; पाकिस्तान द्वारा आरक्षण के बावजूद इस उपग्रह को प्रक्षेपित किया गया था।

सार्क के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए भारत सार्क से आगे नजर आने लगा है। यह पांच सार्क देशों (भारत, भूटान, बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका) और दक्षिण पूर्व के दो देशों के बीच अंतर-क्षेत्रीय सहयोग के लिए एक मंच के रूप में बिस्मटेक (बंगाल की खाड़ी पहल फॉर मल्टी-सेक्शियल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कोऑपरेशन) पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। (म्यांमार और थाईलैंड)। भारत ने नवंबर 2016 में ब्रिक्स गोवा शिखर सम्मेलन में ब्रिक्स के साथ आउटरीच बैठकों के लिए सार्क पर बिस्मटेक को जानबूझकर चुना।

भारत की नीति बिस्मटेक द्वारा सार्क की जगह नहीं है; दोनों प्रासंगिक हैं और पूरक और एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं।

3. भारत का विस्तारित पड़ोस: दक्षिण पूर्व एशिया: आसियान और पूर्वी एशिया

भारत के विस्तारित पड़ोस के संदर्भ में दक्षिण पूर्व एशिया के 10 आसियान देशों का अत्यंत महत्व है। एशियाई बाघों के प्रति भारत की पहली पहुंच 1990 के दशक के शुरू में सोवियत संघ के अंत, शीत युद्ध के अंत और अर्थव्यवस्था को उदार बनाने और इसे शब्द अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करने के हमारे अपने निर्णय की पृष्ठभूमि में की गई थी। परिणामतः, भारत की लुक ईस्ट नीति की घोषणा की गई; एलईपी तीन चरणों से गुजरी है। भारत की 'लुक ईस्ट' नीति (1992-2002) का पहला चरण आसियान केंद्रित था और मुख्य रूप से व्यापार और निवेश संबंधों पर केंद्रित था। इस अवधि के दौरान भारत ने 1992 में आसियान के साथ क्षेत्रीय वार्ता साझेदारी की जिसे 1996 में पूर्ण संवाद सहयोगी के दर्जे में अपग्रेड किया गया था, जब भारत भी आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) में शामिल हो गया था। 2002 से भारत ने वार्षिक भारत-आसियान शिखर सम्मेलन स्तर की बैठकें आयोजित करना शुरू किया।

चरण-2 2003 में शुरू हुआ जब तत्कालीन विदेश मंत्री श्री यशवंत सिन्हा (हार्वर्ड विश्वविद्यालय में; 29 सितंबर, 2003) ने ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया को कवर करते हुए पूर्व की सरकार की विस्तारित परिभाषा को साझा किया, जिसमें आसियान अपने मूल में था। उन्होंने कहा कि नए चरण में व्यापार से व्यापक आर्थिक और सुरक्षा मुद्दों पर बदलाव के रूप में भी चिह्नित किया गया है, जिसमें समुद्री गलियारों की रक्षा और आतंकवाद विरोधी गतिविधियों के समन्वय के संयुक्त प्रयास शामिल हैं। 2012 में, बातचीत साझेदारी के 20 वर्षों का समापन सामरिक साझेदारी में हुआ।

2014 में, प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली नई सरकार ने "लुक ईस्ट पॉलिसी (एलईपी) का नाम बदलकर "एक्ट ईस्ट पॉलिसी (ईईपी)" रखा; यह रीब्रांडिंग से अधिक था।

तब से, सरकार ने आसियान के साथ संबंधों में अधिक "गतिशील" और "कार्रवाई उन्मुख" दृष्टिकोण की मांग की है। आसियान के भीतर एक उप क्षेत्र जिसका भारत के पूर्वोत्तर के साथ सापेक्ष निकटता अंतर्निहित लाभ है, सीएमएलवी देशों (कंबोडिया, म्यांमार, लाओस और वियतनाम) के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए काफी ध्यान दिया जा रहा है। अपनी सबसे महत्वपूर्ण पहल के रूप में भारत सरकार ने इस क्षेत्र में भारतीय निवेश को बढ़ावा देने के लिए 500 करोड़ रुपये (लगभग 71.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर) के कोष के साथ भारतीय निर्यात और आयात बैंक में 2016 में परियोजना विकास कोष की स्थापना की।

भारत की एक्ट ईस्ट नीति का सबसे महत्वपूर्ण प्रदर्शन 2018 गणतंत्र दिवस समारोह में राष्ट्राध्यक्षों और सरकारों के प्रमुखों की उपस्थिति थी। भारत को अब न केवल इस क्षेत्र के साथ अपने आर्थिक और सामरिक संबंधों को सुदृढ़ करने की आशा है बल्कि इस क्षेत्र में भी संभावित सुरक्षा संतुलन के रूप में उभरने की आशा है। भारत-अमेरिका-जापान-ऑस्ट्रेलिया कार्ड इस दिशा में सूचक हैं। क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी) से बाहर रहने का हमारा हालिया निर्णय हमारे राष्ट्रीय हितों द्वारा निर्देशित था।

4. संयोजकता

भारत, दक्षिण एशिया को एकीकृत करने और दक्षिण एशिया को अन्य क्षेत्रों विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य एशिया से जोड़ने के लिए भौतिक और डिजिटल संयोजकता पर काफी जोर देता है। दक्षिण एशिया के भीतर, बांग्लादेश-भूटान-भारत-नेपाल (बीबीआईएन) मोटर वाहन समझौता चार देशों के भीतर यात्री और मालवाहक वाहनों की आवाजाही के लिए निर्बाध संयोजकता प्रदान करती है।

कुछ परियोजनाएं जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, उनमें सामरिक रूप से महत्वपूर्ण चाबहार बंदरगाह का विकास शामिल है जो एक तरफ भारत को ईरान और अफगानिस्तान के साथ जोड़ता है और दूसरी ओर मध्य एशिया के साथ, पाकिस्तान को दरकिनार करते हुए: भारत और अफगानिस्तान के आम विरोधी। यद्यपि, भारत ने 2003 में इस संदर्भ में ईरान से चर्चा करना शुरू की थी, फिर भी भारत की ओर से वास्तविक प्रोत्साहन 2014 के मध्य में दिया गया था जिसके परिणामस्वरूप दिसंबर 2017 में बंदरगाह के पहले चरण के समझौते पर हस्ताक्षर हुए और इसका उद्घाटन हुआ था। इसके बाद, भारत ने इसे भौतिक रूप में कब्जे में ले लिया है और यह पहला बंदरगाह इंडिया भारत के बाहर काम कर रहा है। अफगानिस्तान ने फरवरी 2019 में जरांज-चाबहार मार्ग का उपयोग करते हुए भारत को अपना पहला कार्गो भेजा था। भारत ने इससे पहले इस समुद्री मार्ग का इस्तेमाल करते हुए अफगानिस्तान को 2017 के अंत में गेहूं भेजा था। भारत ने लैंडलॉक अफगानिस्तान के लिए विश्वसनीय वैकल्पिक आपूर्ति मार्गों के रूप में दो प्रत्यक्ष एयर फ्रेट कॉरिडोर स्थापित किए हैं। दिल्ली-काबुल कॉरिडोर जून 2017 से चालू है और मार्च 2019 में दिल्ली ग्रेट कॉरिडोर का उद्घाटन किया गया था।

निर्माणाधीन 1360 किलोमीटर त्रिपक्षीय भारत, म्यांमार थाइलैंड राजमार्ग और अगले वर्ष तक चालू होने की संभावना भारत के पूर्वोत्तर को आसियान से जोड़ देगी। भारत म्यांमार में खंडों के निर्माण की फंडिंग कर रहा है। भारत ने कंबोडिया, लाओस और वियतनाम से भी जुड़ने का प्रस्ताव किया है।[10,11]

कलादान मल्टीमॉडल परिवहन परियोजना अभी तक एक और परियोजना है जो धीमी गति से आगे बढ़ रही थी और पर्याप्त धन के आबंटन से इसमें 2015 में तेजी लाई गई थी। इस परियोजना में समुद्री, अंतर्देशीय जल और सड़क प्रणालियों का उपयोग करके भारत के लैंडलॉक पूर्व को म्यांमार के माध्यम से मुख्य भूमि भारत से जोड़ने की बात कही गई है। केएमटी परियोजना जब पूरी हो जाएगी तो कोलकाता से मिजोरम तक परिवहन के लिए चार दिनों तक के समय में कटौती होगी और एएस द्वारा दूरी 950 किमी कम हो जाएगी।

5. वैश्विक आयामों के मुद्दे

आतंकवाद: भ्रष्टाचार, काला धन, मनी लॉन्ड्रिंग, भगोड़ा आर्थिक अपराधी

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध वैश्विक अभियान भारत सरकार के एजेंडे में उच्च स्थान पर बना हुआ है। यह समझते हुए कि अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय (सीसीआईटी) के मसौदे पर बातचीत धीमी गति से आगे बढ़ रही है, भारत ने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध राष्ट्रों की समिति को एक स्वेच्छिक बहुपक्षीय मंच के रूप में बनाने की योजना बनाई है। पाकिस्तान के एक निहित संदर्भ में भाजपा घोषणापत्र 2019 ने आतंकवाद का समर्थन करने वाले ऐसे देशों और संगठनों को अलग-थलग करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हर संभव कदम उठाने की भारत की प्रतिबद्धता की घोषणा की। भारत लॉबी जारी रखने की संभावना है ताकि पाकिस्तान को "ग्रे" से "फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीए) की ब्लैक लिस्ट में ले जाया जा सके।

भारत को मानना होगा कि आतंकवाद से जुड़े मुद्दों पर पाकिस्तान की रक्षा और आतंकवाद के प्रति कुछ देशों का चयनात्मक दृष्टिकोण एक चुनौती है।

भारत भ्रष्टाचार, काला धन, धन शोधन, भगोड़ा, आर्थिक अपराधियों जैसे वैश्विक मंचों पर उठाने पर भी केंद्रित है। विजय मलाया, नीरव मोदी आदि जैसे आर्थिक अपराधियों का शीघ्र प्रत्यर्पण एक और प्राथमिकता होगी।

जलवायु परिवर्तन: भारत ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने की दिशा में अपना योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है और साथ ही आशा करता है कि विकसित देश उत्सर्जन को कम करने और धन के माध्यम से विकासशील देशों की सहायता करने में और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए प्रौद्योगिकी, 19 वीं और 20 वीं सदी में अविवेकी औद्योगिक विकास के माध्यम से पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के लिए विकसित दुनिया की ऐतिहासिक जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

निरस्त्रीकरण: भारत परमाणु हथियारों के अप्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। परमाणु शक्ति के रूप में भारत का रिकॉर्ड बेदाग है। भारत वैश्विक, भेदभाव रहित और सत्यापन योग्य निरस्त्रीकरण के लिए अटल है।

वैश्विक शासन संस्थानों में सुधार भारत की राय है कि संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, आईएमएफ आदि जैसे वैश्विक शासन की संस्थाएं समकालीन दुनिया की जमीनी वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं, जिनके बाद से उन में जबरदस्त बदलाव आया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दशकों बाद संस्थाएं बनाई गई थीं, और इसलिए इसमें सुधार की जरूरत है।

चयनित देशों के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध

पाकिस्तान और चीन

हमारे निकटतम पड़ोस, अब मैं पाकिस्तान और चीन के साथ अपने संबंधों पर चर्चा करने का प्रस्ताव करता हूं।

पाकिस्तान

2014 में पाकिस्तान के साथ भारत के संबंध कम निम्न कोटि के थे। अपनी पड़ोस प्रथम नीति के अनुरूप, भारत ने पाकिस्तान के साथ अपने तनावपूर्ण संबंधों को सामान्य बनाने के लिए काफी प्रयास किए; 2016 के प्रारंभ तक यह बहुतायत से स्पष्ट था कि पाकिस्तानी विस्तृत राष्ट्र (सेना और आईएसआई) को बातचीत की बहाली में कोई दिलचस्पी नहीं थी और उसने भारत को नुकसान पहुंचाने के लिए सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा देना और समर्थन जारी रखा। दिसंबर, 2015 के अंत में लाहौर (काबुल से नई दिल्ली) में प्रधानमंत्री मोदी के अनिर्धारित पड़ाव के बावजूद एक सप्ताह के भीतर पठानकोट एयरबेस पर हमला करके पाकिस्तान ने हद कर दी थी। संबंधों को और झटका तब लगा जब जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले के उड़ी में सितंबर, 2016 में हुए आतंकी हमले में भारतीय सेना के 18 सैनिक मारे गए थे। भारत ने उड़ी हमले के एक सप्ताह के भीतर नियंत्रण रेखा के पार पाक के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकवादी शिविरों पर एक सफल "सर्जिकल स्ट्राइक" को अंजाम दिया। इसी तरह फरवरी, 2019 में सीआरपीएफ के 40 जवानों की हत्या करने वाले पुलवामा हमले का पाकिस्तानी क्षेत्र के अंदर बालाकोट में आतंकी प्रशिक्षण केंद्र पर भारतीय वायुसेना के हवाई हमले में तुरंत जवाबी कार्रवाई की गई थी।

अनुच्छेद 370 के निराकरण के बाद कश्मीर मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने के पाकिस्तान के बेचैन प्रयासों के कारण संबंध बद से बदतर हो गए हैं; इन प्रयासों को भारत के सक्रिय कूटनीतिक आक्रमण ने कुशलतापूर्वक विफल कर दिया।

भारत ने "आतंक और वार्ता एक साथ नहीं हो सकते" की एक दृढ़ नीति अपनाई है, और यह बहुतायत से स्पष्ट कर दिया है कि, जब तक पाकिस्तान द्वारा राष्ट्र प्रायोजित और समर्थित आतंकवाद पर लगाम लगाने, भारत के विरुद्ध निशाना साधने, और कश्मीर में हस्तक्षेप को रोकने के ठोस और सत्यापनयोग्य ठोस सबूत नहीं होंगे, तब तक कोई विचलन नहीं किया जाएगा।

चीन

सितंबर, 2014 में चीन के राष्ट्रपति शी पिंग की भारत यात्रा के दौरान भारत ने दोस्ती का हाथ बढ़ाया और स्पष्ट संदेश दिया कि दोनों देशों को मिलकर काम करना चाहिए ताकि 21वीं सदी एशिया की हो सके। भारत-चीन संबंधों की गति में हालांकि भारत की इच्छा के अनुकूल विकास नहीं हुआ। भारत, चीन की महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव खासकर चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) का समर्थन नहीं करता जो पाक के कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरता है और इस तरह संप्रभुता का मुद्दा उठाता है। चीन परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में भारत की सदस्यता को भी अवरुद्ध कर रहा है और आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को आतंकवाद का शिकार बताकर उसकी रक्षा करता है और इस बात की हिमाकत करता है कि आतंकवाद से जुड़े मुद्दों का समाधान करते समय किसी भी देश को बाहर नहीं किया जाना चाहिए। चीन अपनी ओर से भारत के साथ हाथ मिलाने के बारे में आशंकित है ताकि भारत-प्रशांत क्षेत्र में इसका मुकाबला करने के लिए चीन, विरोधी गठबंधन बना सके। चीन के पक्ष में व्यापार के भारी संतुलन से उत्पन्न मुद्दे हैं, और अनसुलझे सीमा विवाद भी हैं। सितंबर, 2017 में भारत और चीनी सैनिकों के बीच लंबे समय तक डोकलाम में आमने-सामने रहने से द्विपक्षीय संबंधों के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया था लेकिन सौभाग्य से कूटनीति के कुशल उपयोग के फलस्वरूप इसका समाधान हो गया था। अप्रैल 2018 में चीन में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी पिंग के बीच अनौपचारिक शिखर सम्मेलन से जो समझ उभरी थी, उसे वुहान स्प्रिट के नाम से जाना जाता है, जिसका सार यह है कि दोनों पक्षों को अभिसरणों को बनाने और संभालने के प्रयास बढ़ाने चाहिए। शांतिपूर्ण चर्चाओं के माध्यम से मतभेद, और भारत और चीन के बीच शांतिपूर्ण, स्थिर और संतुलित संबंध वर्तमान वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच स्थिरता के लिए एक सकारात्मक

कारक होंगे, और आगे द्विपक्षीय संबंधों का उचित प्रबंधन होगा जो क्षेत्र के विकास और समृद्धि के लिए अनुकूल होगा, और एशियाई सदी के लिए स्थितियां पैदा करेगा। वुहान स्प्रिट को अक्टूबर, 2019 में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच दूसरे अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के माध्यम से आगे बढ़ाया गया था जो "चेन्नई कनेक्ट" के रूप में लोकप्रिय बताया गया था। भारत और चीन को बांटने वाले मुद्दों का निकट भविष्य में समाधान होने की संभावना नहीं है। इस बीच भारत से आशा की जाती है कि वह जब भी संभव हो (जैसे व्यापार और निवेश) चीन के साथ सहयोग करे, जब भी आवश्यक हो उसका (जैसे डोकलाम) सामना करे और जब भी अवसर की मांग हो (चीन के प्रभाव का मुकाबला करना) चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करे। चीन परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में भारत की सदस्यता को भी अवरुद्ध कर रहा है और आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को आतंकवाद का शिकार बताकर उसकी रक्षा करता है और इस बात की हिमाकत करता है कि आतंकवाद से जुड़े मुद्दों का समाधान करते समय किसी भी देश को बाहर नहीं किया जाना चाहिए। चीन अपनी ओर से भारत के साथ हाथ मिलाने के बारे में आशंकित है ताकि भारत-प्रशांत क्षेत्र में इसका मुकाबला करने के लिए चीन, विरोधी गठबंधन बना सके। चीन के पक्ष में व्यापार के भारी संतुलन से उत्पन्न मुद्दे हैं, और अनसुलझे सीमा विवाद भी हैं। सितंबर, 2017 में भारत और चीनी सैनिकों के बीच लंबे समय तक डोकलाम में आमने-सामने रहने से द्विपक्षीय संबंधों के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया था लेकिन सौभाग्य से कूटनीति के कुशल उपयोग के फलस्वरूप इसका समाधान हो गया था। अप्रैल 2018 में चीन में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी पिंग के बीच अनौपचारिक शिखर सम्मेलन से जो समझ उभरी थी, उसे वुहान स्प्रिट के नाम से जाना जाता है, जिसका सार यह है कि दोनों पक्षों को अभिसरणों को बनाने और संभालने के प्रयास बढ़ाने चाहिए। शांतिपूर्ण चर्चाओं के माध्यम से मतभेद, और भारत और चीन के बीच शांतिपूर्ण, स्थिर और संतुलित संबंध वर्तमान वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच स्थिरता के लिए एक सकारात्मक कारक होंगे, और आगे द्विपक्षीय संबंधों का उचित प्रबंधन होगा जो क्षेत्र के विकास और समृद्धि के लिए अनुकूल होगा, और एशियाई सदी के लिए स्थितियां पैदा करेगा। वुहान स्प्रिट को अक्टूबर, 2019 में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच दूसरे अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के माध्यम से आगे बढ़ाया गया था जो "चेन्नई कनेक्ट" के रूप में लोकप्रिय बताया गया था। भारत और चीन को बांटने वाले मुद्दों का निकट भविष्य में समाधान होने की संभावना नहीं है। इस बीच भारत से आशा की जाती है कि वह जब भी संभव हो (जैसे व्यापार और निवेश) चीन के साथ सहयोग करे, जब भी आवश्यक हो उसका (जैसे डोकलाम) सामना करे और जब भी अवसर की मांग हो (चीन के प्रभाव का मुकाबला करना) चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करे।

दो बड़ी शक्तियां: संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस

संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंधों की गति प्रभुत्व पर रही है सिवाय इसके कि हाल के दिनों में द्विपक्षीय संबंधों में कुछ अड़चनें आई हैं। अमेरिका ने रक्षा साझेदार का दर्जा दिया है जो भारत को नाटो सहयोगियों के समकक्ष रखता है। अमेरिका इस बात को लेकर उत्सुक है कि भारत एशिया में चीन के लिए काउंटर वेट का काम करे। अमेरिका यह भी चाहेगा कि भारत इस क्षेत्र के संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया और अन्य लोगों के साथ मिलकर समुद्री सुरक्षा, नौवहन की स्वतंत्रता, समुद्री डकैती और आपदा प्रबंधन जैसे मामलों में हिंद-प्रशांत महासागर में सुरक्षा प्रदाताओं के रूप में कार्य करे। इसका अनकहा उद्देश्य चीन के विस्तारवादी डिजाइनों को नियंत्रित करना है, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर में जहां चीन विवादित द्वीपों पर निर्माण गतिविधियां शुरू कर रहा है।

रूस और ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध (कॉस्टा) (प्रतिबंध अधिनियम के माध्यम से अमेरिका के विरोधियों का प्रतिकार) का असर भारत की रक्षा खरीद (रूस से एस 400 मिसाइल रक्षा प्रणाली) और ईरान से तेल खरीदने में इसकी असमर्थता के कारण उसकी ऊर्जा सुरक्षा पर भी पड़ा। इसके अलावा, संयुक्त राज्य अमेरिका ने जीएसपी को वापस ले लिया है जिसके अंतर्गत 5.6 बिलियन डॉलर मूल्य के संयुक्त राज्य अमेरिका को भारत का निर्यात वरीय प्रशुल्क प्राप्त कर रहा था। भारत ने अमेरिका के भारत में कुछ निर्यातों पर उच्च शुल्क लगाकर जवाबी कार्रवाई की है। इन चिंताओं को अमेरिकी विदेश मंत्री की नई दिल्ली यात्रा और प्रधानमंत्री मोदी की राष्ट्रपति ट्रंप के साथ इस वर्ष जून में जी-20 शिखर सम्मेलन की तर्ज पर भेंट के दौरान संबोधित किया गया था। भारत यह संदेश देने में स्पष्ट और दृढ़ था कि अंततः भारत देश के राष्ट्रीय हितों में जो कुछ भी सबसे अच्छा समझता है वह करेगा।

सोवियत संघ और उसके उत्तराधिकारी राष्ट्र रूसी परिसंघ को भारत का विश्वसनीय, आजमाया और परीक्षित मित्र बताया गया है। काफी लंबी अवधि के लिए, रूस भारत के लिए रक्षा खरीद का प्रमुख स्रोत था; अब भी हम भारी नए, आधुनिक रक्षा उपकरणों और उपकरणों के पुर्जों के लिए रूस पर निर्भर हैं। 2014 में कार्यभार ग्रहण करने पर नई सरकार ने भारत की रक्षा आवश्यकताओं में विविधता लाने के लिए तेजी से और आक्रामक रूप से उसे आगे बढ़ाया था। हमारा यह कदम ऐसे समय में आया है जब अमेरिका और यूरोपीय प्रतिबंधों और तेल की कीमतों में कमी के कारण रूस की अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर से गुजर रही थी। रक्षा स्रोतों में विविधता लाने की हमारी वास्तविक इच्छा को रूस ने गलत समझा क्योंकि भारत की रूस से दूरी थी। भारत ने स्थिति को सुधारने और आपसी विश्वास बहाल करने में तीव्रता थी। रूस के साथ हमारे संबंध अब दृढ़ आधार पर हैं और विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक साझेदारी का ध्यान रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष और व्यापार और निवेश पर है। काफी लंबी अवधि के लिए,

रूस भारत के लिए रक्षा खरीद का प्रमुख स्रोत था; अब भी हम भारी नए, आधुनिक रक्षा उपकरणों और उपकरणों के पुर्जों के लिए रूस पर निर्भर हैं। 2014 में कार्यभार ग्रहण करने पर नई सरकार ने भारत की रक्षा आवश्यकताओं में विविधता लाने के लिए तेजी से और आक्रामक रूप से उसे आगे बढ़ाया था। हमारा यह कदम ऐसे समय में आया है जब अमेरिका और यूरोपीय प्रतिबंधों और तेल की कीमतों में कमी के कारण रूस की अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर से गुजर रही थी। रक्षा स्त्रोतों में विविधता लाने की हमारी वास्तविक इच्छा को रूस ने गलत समझा क्योंकि भारत की रूस से दूरी थी। भारत ने स्थिति को सुधारने और आपसी विश्वास बहाल करने में तीव्रता थी। रूस के साथ हमारे संबंध अब दृढ़ आधार पर हैं और विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक साझेदारी का ध्यान रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष और व्यापार और निवेश पर है।

विदेश नीति की चुनौतियां

संतुलन अधिनियम: चल रहे संघर्षों को स्पष्ट करने के लिए,

चुनौतियां अनेक हैं। पड़ोस के देशों और रूस, अमेरिका, चीन जैसे प्रमुख शक्तियों के साथ स्थिर संबंध, जापान, फ्रांस, ब्रिटेन और जर्मनी जैसे विकसित देश और सऊदी अरब, यूएई, ईरान, इजराइल जैसे संसाधन संपन्न देश विशेष रूप से भारत के हित में हैं विशेषकर कच्चे माल, आधुनिक प्रौद्योगिकी, निवेश, अत्याधुनिक हथियार, समावेशी घरेलू विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए क्षेत्र में संयुक्त उपक्रम और मेक इन इंडिया, स्मार्ट सिटी, स्किल इंडिया जैसे कार्यक्रमों की सफलता और बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण के संदर्भ में। यह चुनौती चल रहे संघर्षों को स्पष्ट करने की है। उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस और ईरान और अमेरिका के बीच, चीन-अमेरिका व्यापार युद्ध जिसके परिणामस्वरूप विशेष रूप से प्रतिबंध व्यवस्था है, जैसाकि पहले उल्लेख किया गया है, भारत के अहित के लिए है। [12,13]

भारत की वैश्विक आकांक्षाएं

भारत राजनीतिक रूप से स्थिर देश है और उसकी अर्थव्यवस्था स्थिर है। भारत अपनी सैन्य शक्तियों में धीरे-धीरे लेकिन लगातार वृद्धि कर रहा है। एक बड़े बाजार के रूप में भारत विदेशी निवेश, संयुक्त उद्यम, कमोडिटी निर्यात के लिए एक आकर्षक गंतव्य है। हाल के वर्षों में, अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत का कद काफी बढ़ा है। यकीनन भारत का समय आ गया है। पिछले पांच वर्षों के दौरान भी विदेशी मामलों में कुछ हद तक मुखरता दिखाई दी, जब भारत ने अपना दम-खम दिखाया।

विचार-विमर्श

विगत कुछ वर्षों में भारत की विदेश नीति परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। इसी वर्ष दिल्ली में आयोजित रायसीना डायलॉग में भारत के विदेश सचिव ने कहा था कि “भारत गुटनिरपेक्षता के अतीत से बाहर निकल चुका है और आज अपने हितों को देखते हुए दुनिया के अन्य देशों के साथ रिश्ते बना रहा है।” ध्यातव्य है कि वर्तमान में भारत, विश्व के लगभग सभी मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है और अधिकांश बहुपक्षीय संस्थानों में उसकी स्थिति मज़बूत हो रही है। विशेषज्ञों का मनाना है कि भविष्य में भारत की विदेश नीति इस बात पर निर्भर करेगी कि G20 और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में वह किस प्रकार की भूमिका निभाता है।

कैसे परिभाषित होती है विदेश नीति?

- विदेश नीति एक ढाँचा है जिसके भीतर किसी देश की सरकार, बाहरी दुनिया के साथ अपने संबंधों को अलग-अलग स्वरूपों यानी द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय रूप में संचालित करती है।
 - वहीं कूटनीति किसी देश की विदेश नीति को प्राप्त करने की दृष्टि से विश्व के अन्य देशों के साथ संबंधों को प्रबंधित करने का एक कौशल है।
- किसी भी देश की विदेश नीति का विकास घरेलू राजनीति, अन्य देशों की नीतियों या व्यवहार एवं विशिष्ट भू-राजनीतिक परिदृश्यों से प्रभावित होता है।
 - शुरुआत के दिनों में यह माना गया कि विदेश नीति पूर्णतः विदेशी कारकों और भू-राजनीतिक परिदृश्यों से प्रभावित होती है, परंतु बाद में विशेषज्ञों ने यह माना कि विदेश नीति के निर्धारण में घरेलू कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत की विदेश नीति: मुख्य उद्देश्य

- किसी भी अन्य देश के समान ही भारत की विदेश नीति का मुख्य और प्राथमिक उद्देश्य अपने ‘राष्ट्रीय हितों’ को सुरक्षित करना है।

- उल्लेखनीय है कि सभी देशों के लिये 'राष्ट्रीय हित' का दायरा अलग-अलग होता है। भारत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय हित के अर्थ में क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिये हमारी सीमाओं को सुरक्षित करना, सीमा-पार आतंकवाद का मुकाबला, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा आदि शामिल हैं।
- अपनी विकास गति को बढ़ाने के लिये भारत को पर्याप्त विदेशी सहायता की आवश्यकता होगी। विभिन्न परियोजनाओं जैसे- मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्मार्ट सिटीज़, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, डिजिटल इंडिया, क्लीन इंडिया आदि को सफल बनाने के लिये भारत को विदेशी सहयोगियों, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, वित्तीय सहायता और टेक्नोलॉजी की ज़रूरत है।
 - उल्लेखनीय है कि हाल के कुछ वर्षों में भारत की विदेश नीति के इस पहलू पर नीति निर्माताओं ने काफी अधिक ध्यान दिया है।
- विश्व भर में भारत का डायस्पोरा भी काफी मज़बूत है और तकरीबन विश्व के सभी देशों में फैला हुआ है। भारत की विदेश नीति का एक अन्य उद्देश्य विदेशों में रह रहे भारतीयों को संलग्न कर वहाँ उनकी उपस्थिति का अधिकतम लाभ उठाना है, इसी के साथ उनके हितों को सुरक्षित रखना भी आवश्यक होता है।
- संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारत की विदेश नीति मुख्यतः 4 महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं:
 - भारत को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक खतरों से बचाना।
 - ऐसा वातावरण बनाना जो भारत के समावेशी विकास के लिये अनुकूल हो, जिससे देश में गरीब से-गरीब व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुँच सके।
 - यह सुनिश्चित करना की वैश्विक मंचों पर भारत की आवाज़ सुनी जाए और विभिन्न वैश्विक आयामों जैसे- आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण और वैश्विक शासन के मुद्दों को भारत प्रभावित कर सके।
 - विदेश में भारतीय प्रवासियों को जोड़ना और उनके हितों की रक्षा करना।

भारतीय विदेश नीति के मुलभूत सिद्धांत हैं:

- पंचशील सिद्धांत: उल्लेखनीय है कि पंचशील सिद्धांत को सर्वप्रथम वर्ष 1954 में चीन के तिब्बत क्षेत्र तथा भारत के मध्य संधि करने के लिये प्रतिपादित किया गया और बाद में इसका प्रयोग वैश्विक स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को संचालित करने के लिये भी किया गया। पाँच सिद्धांत निम्नलिखित हैं:
 - एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का पारस्परिक सम्मान।
 - पारस्परिक आक्रमण न करना।
 - परस्पर हस्तक्षेप न करना।
 - समता और आपसी लाभ।
 - शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ

- भारत किसी विशेष देश के विरुद्ध किसी अन्य देश या देशों के समूह द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने का समर्थन नहीं करता है जब तक कि ये प्रतिबंध अंतर्राष्ट्रीय सर्वसम्मति के साथ न अधिरोपित किया जाए। ध्यातव्य है कि भारत ऐसे शांति सैन्य अभियानों में ही हिस्सा लेता है जिनमें संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना बल शामिल हों।
- भारत अन्य देशों के आंतरिक मामलों में दखलअंदाज़ी करने में विश्वास नहीं रखता, परंतु यदि कोई देश अनजाने में या जानबूझकर भारत के राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करता है तो भारत बिना समय बर्बाद किये हस्तक्षेप करने में नहीं झिझकेगा।
- भारत आक्रामकता के स्थान पर निर्माणात्मकता पर ज़ोर देता है। भारत का मानना है कि युद्ध समस्या का हल नहीं बल्कि एक नई समस्या की शुरुआत होता है। परंतु धैर्य की नीति को भारत की कमज़ोरी नहीं माना जा सकता।

बदलती भारतीय विदेश नीति

- भारत की वर्तमान विदेश नीति की सबसे खास विशेषता यह है कि इसमें पूर्व की सभी नीतियों की अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृत्ति सबसे अधिक है।
- भारत अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए कुछ हद तक आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हो रहा है।

- डोकलाम में भारत की कार्रवाई और वर्ष 2016 में उरी आतंकी हमलों के बाद पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक भारतीय नीति के प्रमुख उदाहरण हैं।
- कई जानकारों का मानना है कि भारत की वर्तमान विदेश नीति में विचारों और कार्रवाई की स्पष्टता दिखाई देती है।
- बदलते वैश्विक राजनीतिक परिवेश में भारत अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिये किसी भी औपचारिक समूह पर निर्भरता को सीमित कर रहा है।
- भारत ने अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण कार्य किया है और अमेरिका तथा रूस के साथ भारत के संबंध इस तथ्य के प्रमुख उदाहरण हैं।
- यद्यपि कार्रवाई की स्पष्टता एक स्वागत योग्य कदम है, परंतु जटिल मुद्दों और नीतियों के लिये बारीक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी।
- अमेरिका पर अत्यधिक निर्भरता से भारत की रणनीतिक स्वायत्तता में कमी आ सकती है, अतः आवश्यक है कि संबंधों में संतुलन बनाए रखा जाए।
- विदेश नीति का घरेलू राजनीतिकरण एक चिंता का विषय है। जिसके चलते विदेश नीति का निर्णय लेते समय नेतृत्व को घरेलू कारकों का ध्यान देना पड़ता है और विदेश नीति प्रभावित होती है।[12,13,14]

परिणाम

भारत की विदेश नीति का पहला चरण 1947 में प्रारंभ होकर 1962 तक चलता है। यह आशापूर्ण गुटनिरपेक्षता का दौर रहा। वर्ष 1962 के भारत चीन युद्ध के साथ ही गुटनिरपेक्षता के इस आशावादी सिद्धांत का एक निराशाजनक अंत हुआ। वर्ष 1962 से 1971 तक भारत की विदेश नीति का दूसरा दौर चला जिसे हम यथार्थवाद एवं सुधारों का दौर कह सकते हैं। वर्ष 1964 में भारत ने अमेरिका के साथ रक्षा समझौता किया।

वर्ष 1962 के चीन आक्रमण ने भारत की राजनीति को देश की सुरक्षा राजनीति एवं आर्थिक संसाधनों पर विशेष रूप से बल देने वाली नीतियों की तरफ मोड़ा। इसके बाद तीसरा दौर प्रारंभ होता है 1971 से जो 20 वर्ष के लंबे कालखंड यानी 1991 तक चला। इस दौर में भारत का प्रारंभिक ध्यान अपने क्षेत्रीय संसाधनों को सहेजने पर था। इसका प्रारंभ पाकिस्तान के साथ युद्ध एवं बांग्लादेश के निर्माण के साथ हुआ, परंतु दुर्भाग्य से इसका अंत श्रीलंका में भारतीय शांति सेना की कार्रवाई के एक दुःखद अध्याय के साथ हुआ। हमारी विदेश नीति का चौथा दौर 1991 से लेकर 1999 तक चला जिसमें रणनीतिक एवं कूटनीतिक नीतियों के साथ-साथ देश को आगे बढ़ने के लिए आर्थिक नीतियों का भी समावेश करना पड़ा।

यह वह दौर था जब विश्व शीत युद्ध खत्म होने के बाद पूरी तरह से एक ध्रुवीय या अमेरिका आधारित बन गया था। इस दौर में भारत ने आर्थिक एवं कूटनीतिक क्षेत्रों में स्वयं को बहुत तेजी से स्थापित किया। अमेरिका के साथ अपने संबंधों को सुधारने के क्रम में बड़ा खतरा मोल लेते हुए 1998 में भारत ने अपना दूसरा नाभिकीय परीक्षण किया। नाभिकीय परीक्षण एवं कारगिल में पाकिस्तान को धूल चटाने के कारण वैश्विक स्तर पर भारत का महत्व तो बढ़ा ही, भारत को व्यावहारिक तौर पर विदेश नीति के परिवर्तन का लाभ भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। इसके बाद पांचवां दौर वर्ष 2000 से 2013 तक चला। इस दौर में भारत अमेरिका एवं चीन के बीच में शक्तियों के संतुलन का एक अहम किरदार बनकर उभरा। इस दौर में भारत की प्रासंगिकता पूरे विश्व में तेजी से बढ़ी।



वर्तमान स्वर्णिम दौर

भारतीय विदेश नीति में अभूतपूर्व परिवर्तन तब आना प्रारंभ हुआ जब छठा दौर प्रारंभ हुआ एवं केंद्र में 2014 में भाजपा की सरकार बनी। यह दौर ऊर्जावान कूटनीति एवं शक्तिशाली निर्णयों का है। डा. जयशंकर के अनुसार, यह स्वर्णिम दौर भारत के लिए क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रारंभिक दौर है। वर्तमान में भारत की विदेश नीति पांच प्रमुख बिंदुओं पर कार्य कर रही है। इसमें पहला मुख्य बिंदु है यथार्थवाद। वर्तमान विदेश नीति पूरी तरह से यथार्थवादी है, जिसका उदाहरण हमें यूक्रेन संकट के दौरान रूस के साथ कच्चे तेल की खरीद जैसे निर्णयों में देखने को मिलता है। इसका दूसरा प्रमुख बिंदु है अर्थव्यवस्था संचालित कूटनीति। इस कारण वर्तमान में भारत की विदेश नीति आर्थिक लाभ के द्वारा ही सर्वाधिक प्रभावित हो रही है।

स्वतंत्रता के पूर्व और उसके बाद के दौर में हुए अनेक वैश्विक आर्थिक बदलावों से सबक लेते हुए भारत ने संरक्षणवादी बाजार पद्धति को त्याग कर समावेशी वैश्वीकरण को स्वीकार किया है। इस नई विदेश नीति का तीसरा महत्वपूर्ण बिंदु है बहुध्रुवीय वैश्विक क्रम को स्वीकार करना। भारतीय विदेश नीति की सफलता को हम इस रूप में देख सकते हैं कि उसने विरोधी समूहों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए एक वैश्विक साम्य स्थापित किया है, जैसे शंघाई कारपोरेशन एवं काड आदि समूहों में प्रभावशाली उपस्थिति। इसका चौथा बिंदु उचित जोखिम है।[14]

निष्कर्ष

वैश्विक विकास की राह

भारत अपनी पहचान हाथी की जगह अब शेर के रूप में बना रहा है। इतिहास का विमर्श करने पर यह स्वयं सिद्ध हो जाता है कि कम जोखिम वाली विदेश नीतियों ने कम लाभ दिया है। ऐसे में जब भारत को वैश्विक विकास की राह पर तेजी से आगे बढ़ना है, तो जोखिम भरे कदम उठाना ही होगा। पांचवां बिंदु है वैश्विक परिस्थितियों के अनुसार निर्णय। वैश्वीकरण के परिदृश्य में एक अच्छी विदेश नीति उसे मानी जाती है जिसमें प्रतिस्पर्धाओं, जोखिमों एवं प्रतिफल की वैश्विक स्तर पर अच्छी समझ हो। किसी भी देश द्वारा घरेलू स्तर पर किसी विदेश नीति को गढ़ना आसान हो सकता है, परंतु वैश्विक समझ के अभाव में बनाई गई नीतियां उस देश के लिए खतरा बन सकती हैं।

वर्ष 1947 में कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में ले जाना, शीत युद्ध के दौरान चीन एवं रूस के बीच की दूरियों को सही समय पर भांपने में गलती करना, अक्साई चिन एवं अरुणाचल के मुद्दे पर चीन के इरादों को नहीं समझ पाना, अमेरिका एवं चीन के लिए पाकिस्तान की जरूरत को गंभीरता से नहीं लेना, भारतीय विदेश नीति की वैश्विक परिपक्वता को दर्शाता है। भारत की विदेश नीति के एक लंबे कालखंड को हिचकिचाहट का वह दौर कह सकते हैं जिसमें भारत अपनी ऊर्जा एवं संभावनाओं को बहुत कमतर रखते हुए विश्व मंच पर उसे सही रूप में रखने में असमर्थ रहा था। ऐसी गलतियों के कारण ही आजादी के बाद वैश्विक पटल पर

भारत के साथ एक पक्षपाती एवं अवास्तविक रवैया कायम रहा। वर्ष 2014 के बाद से इस परिस्थिति में व्यापक परिवर्तन दिख रहा है।[15]

संदर्भ

1. "Indian economic growth rate eases" [भारत की आर्थिक विकास दर संतोषपरक] (अंग्रेज़ी में). बीबीसी न्यूज़. ३० नवम्बर २००७. मूल से 25 दिसंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २४ जून २०१४.
2. ↑ "The Non-Aligned Movement: Description and History", nam.gov.za, The Non-Aligned Movement, 21 सितंबर 2001, मूल से 21 अगस्त 2011 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 23 अगस्त 2007
3. ↑ India's negotiation positions at the WTO (PDF), November 2005, मूल (PDF) से 13 सितंबर 2011 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 23 अगस्त 2010
4. ↑ Analysts Say India'S Power Aided Entry Into East Asia Summit. | Goliath Business News, Goliath.ecnext.com, 29 जुलाई 2005, मूल से 9 अगस्त 2011 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 21 नवम्बर 2009
5. ↑ "भारत की 37 देशों के साथ प्रत्यार्पण संधि है". पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 12 फ़रवरी 2014. मूल से 22 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 फ़रवरी 2014.
6. ↑ "India has Extradition Treaties in operation with 37 countries". पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 12 फ़रवरी 2014. मूल से 22 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 फ़रवरी 2014.
7. ↑ "From potol dorma to Jaya no-show: The definitive guide to Modi's swearing in" (अंग्रेज़ी में). फ़र्स्टपोस्ट. २६ मई २०१४. मूल से 28 मई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २६ मई २०१४.
8. ↑ उप्पुलुरी, कृष्ण, संपा° (२५ मई २०१४). "Narendra Modi's swearing in offers a new lease of life to SAARC" (अंग्रेज़ी में). नई दिल्ली: डीएनए इण्डिया. मूल से 27 मई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २६ मई २०१४.
9. ↑ Ganai, Naseer (26 February 2022). "India-Pakistan LoC Truce: One Year On, Peace Prevails" [भारत-पाकिस्तान एलओसी टूस: एक साल बाद, शांति कायम]. Outlook.
10. ↑ Tony Allison (2001). Burma shows India the road to Southeast Asia. Asia Times. Retrieved 12 November 2011.
11. ↑ Years of Isolation Produced Intensely Poor Nation. New York Times (24 July 1988). Retrieved 12 November 2011.
12. ↑ Bhaumik, Subir. (26 September 2007) India-Burma ties. BBC News. Retrieved 12 November 2011.
13. ↑ Realism in India-Burma relations Archived 15 मई 2013 at the वेबैक मशीन. Financialexpress.com (15 September 2003). Retrieved 12 November 2011.
14. ↑ "Asia Times: Myanmar shows India the road to Southeast Asia". मूल से पुरालेखित 22 May 2001. अभिगमन तिथि 21 February 2015.
15. ↑ "Why India shifts its policy on Burma :: KanglaOnline ~ Your Gateway". Kanglaonline.com. मूल से 16 December 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 November 2009.



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 9940 572 462  6381 907 438  ijirset@gmail.com



www.ijirset.com

Scan to save the contact details